माला वर्मा

ई-मेलmalavermahzr@gmail.com

एहसास

बिटिया ने आज सुबह वक्त से पहले फोन किया और चहकते हुए बोल उठी, ‘‘मम्मी, जानती हो, बच्चे के मुखमेंट का आज पहली बार एहसास हुआ। मैं कितनी खुश हूँ, नहीं बता सकती। मम्मी तुम्हें पता है, आज सबह से कई बार उस अजन्मे, अनदेखे बच्चे की छुअन फील कर रही हूँ। ओह! कितना रोमांचक, कितना पवित्र, कितना स्वर्णिम, कितना सुखद, कितना आनंददायी है। इस तरह का फीलिंग तो तुमने भी महसूस किया होगा! तुम्हें कैसा लगा था मम्मी! तुम्हें याद है या भूल गई! मम्मी, तुम अपनी बात बताओ। ऐसा तो सबके साथ होता होगा। मैं आज बहुत खुश हूँ। बहुत ही एक्साइटेड। जी करता है चुपचाप आँखें बंद किए कहीं बैठी, लेटी रहूँ और उस अजन्मे शिशु की छुअन, उस धड़कन को पल-पल अपनी साँस में पिरोती रहूँ। मम्मी, कुछ बोलो! चुप क्यों हो गई! सब ठीक है ना!’’

इधर मम्मी की आँखों से खुशी के आँसू बह रहे थे। जिस बिटिया को अपनी कोख में नौ महीने रखकर उसकी हर छुअन को हर पल महसूस किया था, उसे वह कैसे भूल सकती थी! वही बेटी जिसने वर्षों पूर्व उन्हें 'माँ रत्न' बनने के सौभाग्य से नवाजा था, आज स्वयं माँ बनने के पथ पर अग्रसर थी; और उस हर अनूठे अनुभव, एहसास, खुशी को अपनी माँ से शेयर कर रही थी।

वक्त इतनी तेजी से भागता है क्या? या फिर घड़ी की सूइयाँ माँ और बेटी को इस मुहूर्त में, एक खास मुकाम पर लाकर थम गई थीं !! बेटी की चहकती आवाज और माँ का दिल अब एक संग धड़क रहा था...